अथ चतुर्थप्रश्नःप्रारभ्यते ॥

अथ हैनं सौर्य्यायणो गार्ग्यः पप्रच्छ । भगवन्नेतस्मिन् पुरुषे कानि स्वपन्ति कान्यस्मिन् जाग्रति कतर एष देवः स्वप्नान् पश्यति कस्यैतत् सुखं भवति कस्मिन्नु सर्व्वे संप्रतिष्ठिता भवन्तीति ॥ १ । ४२ ॥

अथ प्रश्नोपनिषद् के चतुर्थप्रश्न की भाषाटीका का प्रारम्भ ।

हे सौम्य ! प्रथम प्रश्न करके कहे प्रकार कर्म्म उपासनाकी परिणाम, गतिको श्रवणकरके तिनसे वैराग्यवान् हुआ । और द्वितीय तृतीय प्रश्नकरके कहीगई जे प्राणकी उपासना तिसकरके चित्तकी एकाग्रता और शुद्धिवाला हुआ और इसही करके विवेकादि साधनचतुष्टय करके सम्पन्न जो उत्तमाधिकारी को पराविद्या (ब्रह्मविद्या) कि जिसकरके अक्षरब्रह्मकी प्राप्ति होतीहै तिसके श्रवणार्थ चतुर्थ पंचम और षष्ठ इन तीनों प्रश्नोंका प्रारम्भ करते हैं ॥

१ ॥ हे सौम्य! 'अथ हैनं सौर्य्यायणोगार्ग्यःपप्रच्छ' < तिसके पश्चात् इसको सौर्य्यमुनिकापुत्र गार्ग्यनामामुनि प्रश्न करताभया > अर्थात् कौसल्यनाममुनिके समाधान होने के पश्चात् सौर्य्यमुनिका पुत्र गार्ग्यनामवाला मुनि इस उत्तरदाता सर्वज्ञ अपने आचार्य्य पिप्पलादमुनिको पूंछताभया ॥ यहां अभिप्राय यह है कि पूर्वके प्रथम, द्वितीय, और तृतीय इन तीनों प्रश्नों से संसार रूप व्याकृत 'अर्थात् कार्यमय जगत् के अन्तर्गत साध्य साधनमय, अर्थात् कर्म उपासना और तिनके फलमय, अनित्य सर्व प्राणरूप अपरब्रह्मकी विद्याके विषयको समाप्तकरके अब असाधनरूप प्रमाणोंकी प्रवृत्तिसे रहित अर्थात् अप्रमेय मनका

UNIVERSITÄTS-BIBLIOTHEK HEIDELBERG
http://digi.ub.uni-heidelberg.de/diglit/atharvavediyaprasnopanisad1921/0055
gefördert durch die DFG